International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 99-101

दयाचन्द मायना के किस्सों में स्त्री अस्मिता

सरिता आर्या

सह–आचार्या, राजकीय महाविद्यालय, घरौंड़ा, करनाल, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

हरियाणवी लोक–साहित्य को समय–समय पर बहुत से लोक कवियों ने अपने लेखन व गायन से समृद्ध किया। हरियाणा के लोकप्रसिद्ध, अमर गायक हैं[1] :– धनपत निदांणा, बाजे भगत, लखमीचन्द, मांगेराम, चंद्रबादी, चंदन सिंह बीबीपुर और सूरत सिंह नांगल। इसी कड़ी में महाशय दयाचन्द मायना का नाम भी अग्रगण्य पंक्ति में हैं। बीसवीं सदी के हरियाणवी जनजीवन को लक्ष्य करके उन्होंने विविध और विपुलगामी साहित्य का प्रणयन करके हरियाणा के लोक सांस्कृतिक परिवेश को नयी ऊर्जा प्रदान की, जो वर्तमान में भी अत्याधिक प्रासंगिक है।

दयाचन्द मायना का परिचय

लोककवि महाशय दयाचन्द मायना जी का जन्म 10 मार्च, 1915 को वर्तमान हरियाणा के रोहतक जिले के गांव मायना में हुआ था। इनके पिता का नाम मान्य नान्हूराम तथा माता का नाम श्रद्धेया जुमिया देवी था। जब दयाचन्द जी मात्रा छः वर्ष के थे, तो उनकी माता का देहान्त हो गया। दयाचन्द जी की तीन बहनें व एक भाई था। उनका पालन–पोषण उनकी बड़ी बहन भगानी देवी ने मातृवत् किया। जब वे सात वर्ष के हुए तो उनका दाखिला स्कूल में करवाया गया। परन्तु जातीय भेदभाव से परेशान होकर उन्होंने 10–12 दिन में ही स्कूल छोड़ दिया। सन् 1941 में दयाचंद जी पफौज में भर्ती हो गये। पफौज में रहते हुए उन्होंनें हिन्दी, अंग्रेजी, ऊर्दू भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया और रागनियों, भजनों व किस्सों की रचना प्रारम्भ कर दी। उन्होंने 6 वर्ष पफौज में नौकरी की। इसके बाद लोकगायक के रूप में सन् 1952 से 1954 तक सी.ओ. डी. दिल्ली कैंट में नौकरी की। उनका लेखन देशभर में धूम मचा रहा था अतः उन्होंने इस नौकरी से त्यागपत्रा देकर लेखन, गायन व वादन को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया।

कृतित्व

महाशय दयाचन्द ने अपने जीवन काल में अपार साहित्य की रचना की। एक अनुमान के अनुसार उनकी कुल रागणियों की संख्या छह सौ से ऊपर है, परन्तु अद्यतन प्रकाशित 'महाशय दयाचन्द मायना ग्रन्थावली' सम्पादक श्री राजेन्द्र बडगूजर के अथक प्रयासों से इक्कीस किस्सें और कुल 150 पफुटकल रागणियां ही प्रकाशित हुई हैं[2]। शेष साहित्य प्रकाशित हो सकें इसके लिये साहित्य प्रेमियों द्वारा महानतम प्रयास किये जा रहे हैं।

दयाचन्द मायना के प्रकाशित किस्सों[3] में पूर्णिमा प्रकाश, नीलम पुखराज, कवि कालीदास, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, ब्रिगेडियर होशियार सिंह, देवर भाभी, संतमाता शबरी भीलनी, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, मायावती मास्टर, वीर हकीकत राय, बलवा मंगल सूरदास, धर्मनीति सदावर्ती, सती अनुसूईया, राजा मोरध्वज दानी, राजा परीक्षित नावलदे, राजा कारक और सावलदे, अंजना पवन, चंदा चित्रामुकुट, राजा ढोल मरवण, सुरेखा हरण, सरवर नीर है।

किस्सों का विवेच्य विषय

महाशय दयाचन्द के लेखन व गायन का मुख्य उद्देश्य मात्रा मनोरंजन न होकर लोक सुधर है। उनके किस्से मानवता, परोपकार, ईमानदारी, कड़ी मेहनत, सत्य, प्रेम, दया, त्याग आदि आदर्श गुणों से ओत प्रोत हैं और उनका कथानक अपने समय की गूढ़ समस्याओं–साम्प्रदायिकता, जातीय भेद, लिंग भेद के विरूद्ध आवाज़ बुलन्द करते हुए उनके हल खोजने का सार्थक प्रयास करता है। उन्होंने अपने किस्सों में जहां अमीर–गरीब, शिक्षा–अशिक्षा, समानता–असमानता, सत्य–झूठ, स्वार्थ–परोपकार आदि युग्मों पर विचार किया वहीं स्त्री–पुरुष, संबंधें को उद्घाटित करते हुए 'स्त्री अस्मिता' के सजग प्रहरी के रूप में कार्य किया।

स्त्री अस्मिता का अभिप्राय

'अस्मिता' शब्द अस्मि+तल (Vki~)[4] से बना है, जिसका अर्थ है अहंकार, मैं का भाव, अपनी सत्ता की पहचान। पहली बार अज्ञेय द्वारा आइडेंटिटी के लिये हिंदी शब्द अस्मिता का प्रयोग किया गया। इन अर्थों के प्रसंग में 'स्त्री अस्मिता' का अर्थ है स्त्री का अपनी 'सत्ता' व 'स्व' की पहचान करना।

मंजू कुमारी के शब्दों में ''स्त्री के 'स्व' की पहचान उसके अस्तित्व से है। जब कोई व्यक्ति अपने समाज, परिवार और परिवेश में अपने हिसाब से जीना चाहता है और जी नहीं पाता है, तब वह परिवार और समाज में अपने अस्तित्व की तलाश करता है। भारतीय धर्मतंत्रा और सामाजिक अर्थव्यवस्था ने तो स्त्री को शिक्षा और सम्पत्ति के अधिकार तथा सामाजिक हैसियत से वंचित कर उसे विवाह और परिवार से इस तरह बांध दिया है कि वह अपनी स्वतंत्राता का आत्मसमर्पण करने की कीमत पर ही सम्मान की जिंदगी प्राप्त कर सकती है[5]।''

''रमणिका गुप्ता 'स्त्री अस्मिता' के प्रश्नोत्तर को और अधिक सरलीकृत करते हुए कहती हैं कि – दरअसल 'स्त्री अस्मिता' पुरुष के समान स्त्री अधिकार, स्त्री के प्रति विवेकमूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पुरुष के वर्चस्व का प्रतिरोध है। औरत का केवल स्वतंत्रा होकर निर्णय ले सकना या आर्थिक रूप से स्वतंत्रा हो जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है। सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल हो। वस्तुतः स्त्री अस्मिता की लड़ाई स्त्री स्वाभिमान की लड़ाई है[6]।''

दयाचन्द मायना ने अपने किस्सों के पुरुष–स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री की वास्तविक सामाजिक स्थिति का बेबाकी से वर्णन करते हुए असमानता आधरित सामाजिक मूल्यों व विचारों की श्रृंखला को तोड़ने का प्रयास किया है।

दयाचन्द मायना के किस्सों में 'स्त्री अस्मिता' संघर्ष :–

दयाचन्द मायना के किस्सों में पूर्णिमा–प्रकाश किस्से की नायिका 'पूर्णिमा' हो या धर्मनीति–सदावर्ती किस्से की नायिका 'धर्मनीति'

सभी स्त्री–पात्रा सामाजिक कर्तव्यों की बेड़ियों में जकड़ी हुई, पुरुष वर्चस्व, अहंकार, जारकर्म, लैंगिक असमानता का शिकार हैं, परन्तु वे इस अन्याय को भाग्य लेखा समझकर चुपचाप सहन नहीं करती बल्कि उसके विरूद्ध आवाज उठाती हैं।

'बलवा मंगल सूरदास' किस्से में विलायत से शिक्षा प्राप्त, पश्चिमी संस्कारों से प्रभावित नायक 'बलवा मंगल' के माध्यम से पुरुष की भोगवादी सोच व स्त्री–पात्रा के रूप में मानवीय मूल्यों व अस्मिता के प्रति सचेत नायिका रंभा का चित्राण किया गया है। रंभा गृहस्थाश्रम की प्रथम रात्रि में पति के दबाव के पश्चात् भी शराब पीने से मना कर देती हैं। बलवा रंभा को विलायती चाल ढाल अपनाने को कहता है, पर रम्भा अपने संस्कारों को नहीं छोड़ती। वह परस्त्री गामी पति के पीछे–पीछे नहीं भागती, बल्कि शांत भाव से घर में ससुर की सेवा करते हुए घर की जिम्मेदारियां सम्भालती है। बलवा के सुमार्गगामी होने पर वह गृहत्याग कर भक्तिमार्ग में उसकी सहायता करती है। किस्से में बलवा मंगल की प्रेमिका 'वेश्या चिंता' भी स्वकर्मानुसार स्त्री अस्मिता के प्रति सचेत है – बलवा मंगल का अपने प्रति अपार लगाव देखते हुए कहती हैं – फजितना वह उसके शरीर के प्रति आकर्षित है। उतना यदि भगवान में अपने मन को रमा ले तो स्वर्ग का दरवाजा उसके लिए स्थायी रूप से खुल जायें[7]।'' 'चिंता वेश्या के इस उपदेश के बाद 'बलवा मंगल' का जीवन बदल जाता है और वह भक्ति मार्ग का पथिक हो जाता है।

धर्मनीति–सदावर्ती किस्से की नायिका धर्मनीति गरीबी में पली बढ़ी, ईमानदार, धर्मात्मा व मेहनती स्त्री है। सदावर्ती से विवाह होने के बाद वह एक पापाचारी, लालची, अमीर परिवार की बहू हो जाती है। उसके दहेज नहीं लाने के कारण उसका लालची ससुर अपने पुत्रा सदावर्ती को धर्मनीति को मारने का आदेश देता है।

''कंजूस सेठ ने सारा परिवार इकट्ठा कर लिया और सदावर्ती से कहने लगा यह बहू हमारे लायक नहीं है। उसको कहीं जंगल में ले जाकर काट दो[8]।'' सदावर्ती धर्मनीति को जंगल में ले जाता है, परन्तु उसके ज्ञान से प्रभावित होकर उसको मारने की बजाय वापिस घर ले आता है और अपने पिता को कहता हैं[9] – 'खोट जरा–सा पाया ना, सै बहू घणी असरापफ पिता'

कंजूस सेठ अपने पुत्रा से नाराज हो उसे कुछ धन देकर घर से निकाल देता है, धर्मनीति उस धन को सदावर्ती के हाथों विद्यालयों, धर्मशालाओं, गऊशालाओं मे दान करवा देती है। धर्मनीति ऐसी स्त्री है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने पति के साथ मानवीय आदर्शों का पालन करते हुए जीवन–यापन करती है और जीवन में आने वाले प्रत्येक पात्रा को परोपकार की भावना से अपनाती है, चाहे वह उसका पापाचारी सुसर ही क्यों न हो।'

वहीं राजा ढोल–मरवण किस्से के नायक ढोल अमी से प्रेम विवाह करते हैं परन्तु बाद में उन्हें मरवण के साथ हुए अपने बाल विवाह की जानकारी होती है तो वह अमी के प्रति उदासीन हो मरवण को पत्नी के रूप में प्राप्त करने निकल पड़ता है। दयाचन्द मायना ने इस किस्से में अमी की नौकरानी के माध्यम से पुरुष मानसिकता को लक्ष्य करके जो रागणी कही है वह भारतीय मर्दों की स्वभावगत सभी बुराईयों का स्पष्टतः उल्लेख करती है[10] –

पधुर तै धेखा करते आए, आज के नई रीत हो सै
गरज–गरज के प्यारे बहना, लोग जिसके मीत हो सै...२

वहीं 'नीलम पुखराज' किस्से में पुरुषों द्वारा शोषित स्त्रियों, बलात्कार की शिकार लड़कियों की सन्तानों के प्रति समाज के असंवदेनशील रवैये को यथार्थ रूप से चित्रित किया गया है। गरीब बिरजू नशे में अंध होकर अपना विवेक इस कदर समाप्त कर लेता है कि जवान बेटी के बार–बार मना करने पर भी वह पैसे लेने के लिये उसे सेठ रत्नलाल के घर भेज देता है। नैना पुरुष मानसिकता से भली प्रकार परिचित है, वह पिता की इस बात का विरोध भी करती है :–

'भूखे सोए भूखे उठे, मैं जाणगी म्हारे टोटा सै
तेरी स्याणी बेटी गैर बख्त, मत छाल जमाना खोटा सै...
तुम ना समझे नगर सेठ की, मैं बोली चाल पिछाण गई
जो इज्जत बेच टूक खां सै, पिता उस कुल की हो हाण गई...[11]

परन्तु बीमार व नशे में धूत पिता की गालियां और मार खाकर वह मजबूर हो सेठ के पास पैसे लेने चली जाती है, सेठ उसे कमरे में बुलाता है और उसका हाथ पकड़ लेता है, नैना विरोध करती है, उसे समझाती है :–

'दुष्ट तू पफूलां नहीं पफलै, गात कोठी की तरह गलै
समझाऊं सू तनै क्यूं हत्यारा बनै।[12]

नैना के भला–बुरा कहने पर भी सेठ उसे अपना शिकार बना लेता है। नैना सेठ रत्नलाल के हाथों अपनी इज्जत गंवा देती है, गर्भवती होने पर व स्वयं की गलती न होने पर भी अपने घर के पुरुष वर्ग व समाज के जुल्मों को सहन करती है यहां तक के गांव से भी निकाल दी जाती है। वह अपना हक मांगने सेठ रत्नलाल के घर भी जाती है परन्तु सेठ नौकरों के हाथ उसे बाहर पिफकवा देता है, नैना सड़क पर एक बच्चे को जन्म दें आत्महत्या कर लेती है वस्तुतः नैना गरीबी, अभावों और शोषण में गुजरती एक ऐसी कन्या की कहानी है जो 'स्व–अस्मिता' के लिये चक्रव्यूह में पफंसे अभिमन्यु के समान संघर्ष करती है और अन्त में न्याय के सब द्वार बन्द देख मौत का वरण करती है वस्तुतः यह आत्महत्या नहीं, समाज द्वारा की गयी हत्या है।

'पूर्णिमा प्रकाश' किस्से की नायिका 'पूर्णिमा' अनाथालय में पली बढ़ी होने के बावजूद उच्च–शिक्षा जारी रखने के लिये संघर्षरत है। अपनी इज्जत और स्वाभिमान की रक्षा के लिये वह जपफरअली जैसे खलनायकों से भिड़ जाती हैः–

दाल ना गलेगी यहाँ, चालै कोन्या तेरी मरोड
तेरे कैसे बदमासा का, दुनिया मैं रहा ना ओड़
ठोर ना ठिकाणा, साण्ड पिफरै राना
बीरां धेरै पिटा करै सै, इस मरदाना[13]

पूर्णिमा, प्रकाश से अन्तर्जातीय विवाह करके जाति आधरित सोच को भी तोड़ने व बदलने का क्रान्तिकारी कार्य करती है जो स्त्री अस्मिता का परिचायक है।

'सरवर नीर' किस्से में सराय की भठियारी सरवर और नीर की मां अमली पर बुरी दृष्टि डालने वाले सौदागर को कड़े शब्दों में कहती है –

'म्हारी सराह मैं उतपणा के, लिये मतना नाम सौदागर
परत्रिाया पै नीत डालणी, खोटे हो सैं काम सौदागर।।'[14]

परन्तु अमली सौदागर की जार–वृत्ति का शिकार हो जाती है। इस किस्से में जार–कर्म से पीड़ित स्त्री का प्रतिकार शब्द[15] :–

'हटज्या दूर परै बदकार, मैं सू बीर घणी लाचार
सूं सती, मेरा एक पति, ना झूठ रती
ओ मूढ मती, ना शर्म कती, हो बुरी मती
जै मनै सतावैगा रे पापी ..... उपदेश परक हैं।

'अंजना–पवन' किस्से में नायक पवन, अंजना के प्रति बुरा व्यवहार करता है और उसे बारह वर्ष के लिये पत्नी के सभी अधिकारों से वंचित कर देता है। जब पवन को ग्यारह साल उपरान्त अपनी गलती का अहसास होता है तो वह अंजना के महल का द्वार खटखटाता है तो अंजना अपनी दासी को कहती है[16] :–

'पाप की हार धर्म की जीत म्हारी जीत'

पवन के महल में आ जाने पर भी जब अंजना पवन से बात नहीं करती तो पवन कहता है – 'मैं आज आपको सुहाग देने आया हूँ।' तो अंजना कहती है – ''कैसा सुहाग, अभी तो ग्यारह साल हुए है। एक साल अभी बाकी है। मुझे मेरे धर्म पर रहने दो और आप भी अपना वचन पूरा करो''[17] स्त्री अस्मिता के स्वर हैं।

पवन अंजना को पत्नीरूप में स्वीकार कर युद्ध के लिये चला जाता है। अंजना गर्भवती हो जाती है, सभी उसे चरित्राहीन समझते हैं। अंजना के मायके व ससुराल के लोग उसका त्याग कर देते हैं। ऐसी परिस्थितियों में दयाचन्द मायना ने अंजना के माध्यम से एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया है कि 'क्या स्त्री का कोई घर नहीं?' अंजना ट्टषि को सम्बोधित करते हुए कहती है–

'ना म्हारे घर गाम गुरु जी, मात–पिता ना भाई,
बेटी करकै डाट लिये हाम शरण आपकी आई[18]।'

राजा परीक्षित और नावलदे किस्सा भी स्त्री की 'स्व' की पहचान खोजने का परिचायक है। जहाँ नावलदे का पिता अपने झूठे अहंकार की रक्षार्थ अपनी बेटी नावलदे को तमाम स्वभाविकताओं से काटकर उसे एक बन्द कमरे में बरसों पालता है। कुष्ठ रोग होने पर अपने पफायदे के लिये उसे बाहर निकाल कर स्वार्थ सिद्धि के बाद उसे पिफर वहीं बन्द कर देता है। दयाचन्द ने नावलदे के मन को या कहूं तो सदियों से घर की चार दीवारियों में दम तोड़ती स्त्री को स्वर देते हुए कहा है –

पैदा हुई उसी दिन ठाकै, भौरे म्हं गेरी,
क्यूं काठों सो आज, पिता नै के जरुरत पड़ी मेरी...[19]

इतिहास में स्त्री ज्ञान दंभ रूप में प्रचारित, प्रसारित, समीक्षित कवि कालिदास जीवन परिचय, दयाचन्द मायना के सम्पूर्ण वाड्.मय के अध्ययन के पश्चात् एक शिक्षित कन्या विद्योत्तमा व एक अशिक्षित, गंवार, मूर्ख कलवा की एक अहंकारी, पुरुषवर्चस्व विचारधरा के मंत्री द्वारा करवाये गये बेमेल विवाह की पुष्टि मात्रा लगता है। जिसे विद्योत्तमा 'स्त्री अस्मिता' का प्रमाण देते हुए मानने से इन्कार कर देती है। वस्तुतः यह किस्सा परम्परावादी समाज में निर्णायक की भूमिका में बैठे पुरुषवर्चस्व की अधिकारिता को तोड़कर स्त्री के स्वविवेकानुसार निर्णय लेने की नवीन व क्रान्तिकारी सोच है तो दयाचन्द मायना जी विद्योत्तमा के माध्यम से इस युग में भी महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित करना चाहते थे।

'संत माता शबरी भीलनी' किस्से का कथय भी भारतीय समाज की विभीषिका 'जातिप्रथा' में एक अछूत कन्या द्वारा भक्ति व सन्यांस मार्ग द्वारा स्वतः की पहचान को उल्लिखित करता है। नायिका 'शबरी' भीलनी लिंग व जातीय भेद की दीवारों को तोड़कर समाज में स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करती है और समाज में मानव समता का संदेश पफैलाने में सपफल हुई है।

'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस' किस्से में दयाचन्द मायना जी ने क्रांतिकारी सुभाष चन्द्र बोस की प्रेरणा उसकी भाभी को बताया है और सुभाषचन्द्र बोस द्वारा 'इंडियन नेशनल आर्मी' में महिलाओं की भर्ती व स्वतंत्राता आन्दोलन में महिलाओं के योगदान को महत्त्वपूर्ण रूप से उजागर किया है[20] जिससे यह सिद्ध करता है कि दयाचन्द जी महिलाओं की प्रत्येक क्षेत्रा में भागीदारी के पक्षधर और स्त्री अस्मिता के सच्चे प्रहरी थे।

निष्कर्ष

दयाचन्द मायना के सम्पूर्ण किस्सों के अध्ययन के पश्चात् यह सिद्ध होता है कि वे एक क्रान्तिकारी कवि थे और उनकी सोच अपने युग से बहुत आगे की थी। उन्होंने सामाजिक परिवेश में बंधे पुरुष व स्त्री को एक दूसरे का पूरक माना व दोनों के लिये समान अधिकारों व कर्त्तव्यों की पैरवी की। उन्होंने स्त्री को त्याग, तप, विवेक का पर्याय मानकर सदियों की दमनकारी पुरुष मानसिकता की भर्त्सना की व पुरुषों में मानवीय मूल्यों व आदर्शों की स्थापना व आवश्यकता पर बल दिया। वर्ष 2016 में अनिरुद्ध राय चौधरी द्वारा निर्देशित पिफल्म 'पिंक' दयाचन्द मायना के विचारों को ही नायक अमिताभ बच्चन द्वारा स्वर देते हुए कहती हैं[21] –

We should save our boys, not our girls... because if we save our boys then our girls will be safe.

दयाचन्द मायना के किस्सों में 'स्त्री अस्मिता' का मार्ग 'न' शब्द से प्रारम्भ होता है क्योंकि स्त्री का न केवल एक शब्द नहीं है अपने आप में एक वाक्य है, इसे किसी तर्क, स्पष्टीकरण या व्याख्या की जरूरत नहीं होती[22] अर्थात् पुरुषों को आदर्श व मर्यादाओं की सीख देता यह लेखक देश की आधी आबादी को पुरुष वर्चस्व, पुरुषशोषण व असमानता के खिलापफ सचेत करके, निषेध शब्द से लैस करके उसे संघर्ष की सीख देता है और यहीं भावना कहीं स्त्री अस्मिता का मार्ग बनता है तो कहीं मंजिल।

संदर्भ सूची :–

1. महाशय दयाचन्द मायना ग्रन्थावली, सम्पादक डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर, पृ. 21।
2. वहीं, पृ. 21।
3. वहीं, अनुक्रमणिका।
4. संस्कृत–हिन्दी कोष, वामन शिवरामआप्टे, पृ. 133।
5. उषा प्रियंवदा की कहानियों में स्त्री–अस्मिता, मंजू कुमारी on www.streekaal.com।
6. रमणिका गुप्ता – स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने, पृ. स. 55।
7. महाशय दयाचन्द मायना ग्रन्थावली, सम्पादक डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर, पृ. 259।
8. वहीं, पृ. स. 266।
9. वहीं, पृ. स. 269।
10. वहीं, पृ. स. 387।
11. वहीं, पृ. स. 124।
12. वहीं, पृ. स. 125।
13. वहीं, पृ. स. 107।
14. वहीं, पृ. स. 410।
15. वहीं, पृ. स. 412।
16. वहीं, पृ. स. 352।
17. वहीं, पृ. स. 352।
18. वहीं, पृ. स. 352।
19. वहीं, पृ. स. 313।
20. वहीं, पृ. स. 158।
21. www.hindilyrics.in>2016/19>pink
22. same